क्या आपका बच्चा डिसलेक्शिया का शिकार है ?

बच्चों को लेकर माता-पिता अक्सर परेशान दिखाई देते हैं. हों भी क्यों न? आखिर उन पर ही माता-पिता का भविष्य निर्भर करता है. आजकल निरंतर बढ़ रहे वैज्ञानिक और तकनीकी युग में बच्चों की शिक्षा-दीक्षा पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है. इसके चलते बच्चे अब पुराने पढ़ाने के तरीकों से न पढ़कर नई तकनीक से अध्ययन कर रहे हैं, जिसका प्रभाव उन विकास पर व्यापक रूप से पड़ता देखा जा सकता है. डिसलेक्शिया कोई रोग नहीं है. फिर क्या है? यह एक यूनानी शब्द है, जिसका अर्थ है 'डिस' अर्थात कठिन और 'लेक्शिया' यानी शब्द. इस तरह पूर्ण अर्थ हुआ शब्द को पढ़ने, बोलने और लिखने में कठिनाई होना. अक्सर बहुत से बच्चे इस तरह की परेशानी को झेलते देखे जाते हैं. इसका अर्थ यह कदापि नहीं होता है कि वह बच्चा अयोग्य है. जबकि बहुधा इसका यह भी अर्थ लगा लिया जाता है. शब्द को बोलने अगर अंग्रेजी भाषा है तो उसकी स्पेलिंग या वर्तनी को याद रखना और वैसा ही लिख पाना बच्चे के लिए कठिन हो जाता है. पर ऐसे बच्चे अक्सर बहुत योग्य देखे गए हैं.

पश्चिमी देशों में इस पर गहन अध्ययन के दौरान ये पता चला है कि बड़े-बड़े और प्रसिद्ध व्यक्ति भी इसका शिकार हो रहे हैं. यह एक मानसिक स्थिति है. अलबर्ट आइन्स्टाइन, लुइस पाश्चर, सर विंस्टन चर्चिल आदि भी इसके शिकार रहे, पर दुनिया उनकी प्रतिभा को जानती है. डिसलेक्शिया एक विश्वव्यापी समस्या है. इसके शिकार अंकों, अक्षरों और शब्दों को पहचानने में असमर्थ रहते हैं. ये लोग अंकों और अक्षरों को उनके लिखे गए रूप में याद नहीं रख पाते. ये स्पेलिंग और वर्तनी में कमजोर होते हैं. इस समस्या को वैज्ञानिक और अध्ययन की आधुनिक आकर्षक तकनीक के जरिए सुधार कर ठीक किया जा सकता है. यह कोई रोग नहीं है.

ऐसे बच्चे कमजोर, अयोग्य, सुस्त, बीमार, आँखों की समस्या के शिकार आदि नहीं होते. डिसलेक्शिया एक न्यूरोलॉजिकल स्थिति पर निर्भर करने वाली है. इसके शिकार दुनिया भर में हैं. अक्सर लड़कियों के मुकाबले लड़के ज्यादा शिकार पाए जाते हैं. अनुपात की दृष्टि से 4 लड़कों के मुकाबले एक लड़की इसका शिकार होती देखी गई है. विश्व के 15 प्रतिशत स्कूल जाने वाले बच्चे इसके शिकार हैं. चीन तथा जापान में इस पर विशेष ध्यान दिया जाता है. इसलिए अमरीका जहां 10 से 20 प्रतिशत बच्चे इसके शिकार हैं, वहीं चीन, जापान में मात्र 5 प्रतिशत बच्चे इसके शिकार देखे गए हैं.

भारत में भी इस दिशा में अध्ययन जोरों पर है. अहमदाबाद के डी.पी.एस. स्कूल की शिक्षिका मंजूला पूजा श्राफ कहती हैं, 'हमने अपने विद्यालय में इस दिशा में अध्ययन कर ऐसे बच्चों को ठीक करने का बीड़ा उठाया है. कामनवेल्थ टीचर एजूकेशन के जरिए हमने मुंबई की नालंदा संस्थान के साथ कार्य आरंभ किया है. भारत में लगभग 3 करोड़ बच्चे इसके शिकार हैं. चेन्नई में मद्रास डिसलेक्शिया एसोसिएशन है. महाराष्ट्र में भी एक डिसलेक्शिया एसोसिएशन है. भारत के स्कूलों में इस दृष्टि से शिक्षकों को शिक्षित करना जरूरी है, जो बच्चों तथा उनके अभिभावकों को जानकारी दे सकें. महाराष्ट्र सरकार इस दिशा में प्रयास कर रही है. शिक्षिका श्राफ के अनुसार गुजरात सरकार को हमने एक प्रस्ताव भेजा है. अन्य राज्यों की हमें जानकारी है.

—ऋतेंद्र माथुर